# आज का पुरुषार्थ 16 Oct 2022

**Source**: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

**धारणा** – *"आज से जीवन में रहते बंधनों से मुक्ति .. उसका अनुभव हमें करना ही है .. मुक्ति जीवनमुक्ति का अनुभव हमें यही पर करना है "*

हमें बाप समान बनना है। और बाबा बंधन मुक्त है पूरी तरह। ब्रह्मा बाबा को भी हम देखे →

**मुक्ति** का भी अनुभव और **जीवनमुक्ति** का भी अनुभव .. दोनों अनुभव ब्रह्मा बाबा ने यही पर किये।

जब तक आत्मा अपने को बंधन मुक्त नहीं बनाती तब तक वह **कर्मातीत** भी नहीं बन पाती।

बाबा हलुवा का **उदाहरण** देते थे कि →

हलुवा जब बन जाता है तो किनारे छड़ देता है। चिपकता नहीं है।

तो हम भी जैसे जैसे सम्पूर्ण बन जाते है सभी किनारे पीछे छूटते जायेंगे। हमें चेक करना है .. हमें कहाँ आसक्तियाँ है? कहाँ कहाँ मोह है?

अब कोई भी यह तो नहीं कह सकता .. हमें मोह नहीं है। मोह मनुष्य को बाँधता है। और जब तक यह बंधन रहता है तब तक मनुष्य जीवन मुक्त अवस्था का **अनुभव** नहीं कर पाता है।

**जीवन में रहते बंधनों से मुक्ति** उसका अनुभव हमें यही करना होता है। तो अब अपने उन बंधनों को चेक कर ले जो हमें **योगयुक्त** नहीं होने देते।

तो अब से हम योगयुक्त थोड़ा सा होने का लक्ष्य बना ले। सभी बंधनों को छोड़ते चले। छोड़ना खुद ही पड़ेगा। कोई और नहीं छोड़ेगा।

विधि सारी बाबा ने बताये है, ज्ञान देते हुए। उन सभी **ज्ञान** को यूज़ करके सभी बंधनों को छोड़ना है। मोह को छोड़ने के लिए **आत्मिक दृष्टि**, ड्रामा के ज्ञान का प्रयोग ..

सबकुछ विनाशी है, इस संसार में **अविनाशी कुछ भी नहीं है।** अविनाशी तो केवल आत्मा है। उसमें ही बुद्धि लगे, वही हमारी दृष्टि में आये।

तो **मोह छूटते जायेंगे।** कई बार दुसरी चीज़ हमें बांधती है। अनेक बार हम खुद बंधते जाते। विस्तार बहुत कर लेते है। चाहे धन के पीछे भागने लगते।

कभी निश्चय टूट जाता विनाश होगा। कभी बच्चे को पैसे चाहिए। या फिर शादियां करानी है। लेकिन भूल जाते, ज्यादा भटकने से धन कमाने में ज्यादा मेहनत लगती है। सारी एनर्जी उसमें जाने लगती है।

धन तो कमानी है, आवश्यकता भी है। लेकिन उसको हम बंधन न बनने दे। बंधन वही है जो हमारी स्थिति को बिगाड़े। जो हमें योगयुक्त नहीं रहने देते। तो ध्यान दे।

तब हमें **जीवनमुक्त अवस्था** का अनुभव होगी। जीवन में रहते हमें लगेगा, हम अनेक चीजों से मुक्त है। हम बहुत सुखी, पैसा कम होते हुए भी बहुत सुखी है।

क्योंकि **परमात्मम सुख** हमें प्राप्त हो रहा है। गहन शान्ति हमारी जीवन में आ गई है। चिन्तायें सब हट गई है। हम चिन्ताओं से मुक्त हो गये है।

हमें अनुभव होगा हम **शक्तिशाली** बनते जा रहे है। हमारी बैटरी चार्ज होती जा रही है। गुण हममें सब बढ़ते जा रहे है।

संसार में अब यही होता आ रहा है कि मनुष्य किसी बंधन में जकड़ गया है तो वह उसके चारों ओर ही घुमता रहता है। उसका ध्यान **सर्व गुणों** की ओर जाता नहीं, **शक्तियों** पर जाता नहीं।

और अगर बंधन छुट जायेंगे तो ध्यान गुण धारण करने पर, शक्ति धारण करने पर जायेगा। तो अब सभी बाप समान बनने की ओर ध्यान देंगे। और अपने को जीवनमुक्त और बंधन मुक्त बनायेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

**BK Google**: www.bkgoogle.org

**Website**: www.shivbabas.org